फरिश्तों के शिरोमणि - प्रजापिता ब्रह्मा

ईश्वर से मिलन की चाहत तो अनेकों की होती है। परमात्मा का गुणगान तो सभी करते हैं। परमात्मा की रचना को देख उसकी विस्मयकारी कारीगरी की प्रशंसा भी बहुत लोग करते है। किन्तु विश्व में कुछ ऐसी अद्वितीय व्यक्तित्व की धनी विशेष आत्माऐं होती हैं जिनकी परमात्मा से गहन प्रीत होती है। वे परमात्मा के प्रेम में इतने तन्मय हो जाते हैं कि वे परम-सत्ता परमात्मा से अपने अस्तित्व की अनुभूति में एकाकार (कम्बाइन्ड) हो जाते हैं। ऐसे ही अलौकिक प्रतिभा के धनी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा एक अद्वितीय व्यक्तित्व थे जिन्होंने अव्यक्त फरिश्ता स्वरुप को प्राप्त किया।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा से मिलन या साक्षात्कार की अपनी इस अलौकिक चाहत को इतना घनीभूत किया कि वे अन्तर्मुखी हो परमात्म-मिलन के अलौकिक अनुभव करने लगे । उन्हे तू-मैं का भेद ऐसा स्पष्ट होने लगा था कि उन्हें एक की अनन्तता की असीम अनुभूति हुई । केवल इतना ही नहीं बल्कि उनकी परमात्म-मिलन की प्यास इतनी तीव्र थी कि दिव्य सत्ता परमपिता परमात्मा ने स्वयं उनके मानवीय शरीर में दिव्य प्रवेश कर खुदा नूर और आदम के एकत्व को साकार में प्रत्यक्ष अनुभव कराया । वे निराकार ज्योर्तिबिन्दु परमात्मा के साकार (मानवीय) माध्यम बने। वे मनुष्य सृष्टि के आदि पिता, प्रजापिता ब्रह्मा कहलाये। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने त्याग-तपस्या-सेवा के बल से आत्मा की सर्वश्रेष्ठ मंजिल 'सम्पूर्णता' को प्राप्त किया।

आध्यात्म की राह पर चलने वालों को फरिश्ता स्थिति की व्याख्या को समझना आवश्यक है। ऐसी व्याख्या समझने से सम्पूर्ण पवित्र प्रकाशमय (तेजोमय) काया वाले, फरिश्ता स्वरूप धारण करने वाले, अपनी दृढ इच्छा शक्ति से अव्यक्त सेवा में तत्पर रहने वाले 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा' जो फरिश्तों के भी शिरोमणि हैं, की सम्पूर्ण स्थिति (फरिश्ता) का एक स्पष्ट चित्र हमारे सामने उभर आता है। इस स्पष्टीकरण से अध्यात्म के पुरूषार्थियों को यह ज्ञात हो जाता है कि आत्मा की उच्चतम स्थिति का सर्वोच्च मूल्यांकन क्या होता है। प्रेरणा के स्रोत द्वारा फिर से प्रेरित हो आत्मा के भाव जगत में अन्तर का आलोक पैदा हो, इसलिए यह स्पष्टीकरण आवश्यक है। आत्मा की पूर्ण जाग्रत स्थिति को दूसरे अर्थो में 'सम्पूर्णता' कहते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने स्वयं की साधना में आत्मा की जीवन्तता की विराटता का अनुभव किया। ऐसी विराटता जिसकी अनुभूति में आत्मा कर्म-बन्धनों से, कर्मो से अतीत (कर्मातीत) की स्थिति का अनुभव करती है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपनी फरिश्ता स्थिति को प्राप्त किया। आत्मा की फरिश्ता स्थिति की व्याख्या को आधार बना कर आइये हम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की स्थिति का उनके कर्तव्यों के साथ तुलना करते हुए उनके व्यक्तित्व का सूक्ष्मावलोकन करें।

फरिश्ता अर्थात जिसका समूचे विश्व से सम्बन्ध हो। सबसे सम्बन्ध का भावार्थ है कि जिसकी सभी के प्रति शुभ भावना अर्थात् आत्मीयता का आन्तरिक भाव हो। भाव के स्तर पर फरिश्ता का सम्बन्ध सबसे होता है। विचार या भौतिक स्तर पर वह सभी से उपराम होता है। फरिश्ता का सम्बन्ध सभी आत्माओं से अपने प्रगाढ़ रूप (अलौकिक) में होता है, स्थूल रूप से नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा आज भी अपनी शक्तिशाली सूक्ष्म शक्तियों से सर्व आत्माओं के साथ आकारी सम्बन्ध बनाये हुए हैं। वे अर्शवासी (अव्यक्त लोक वासी) तो हुए किन्तु अभी भी फर्शवासी (साकार लोक वासी) आत्माओं से शुभ-भावनाओं के द्वारा आध्यात्मिक रूप से जुडे हैं।

फरिश्ते अपनी दृढ इच्छा शक्ति से बेहद की सेवा में तत्पर रहतें हैं। तपस्या करके सम्पूर्णता की मंजिल को प्राप्त करने के परोक्ष में उनका यही लक्ष्य होता है कि अपनी सूक्ष्म अव्यक्त स्थिति से सर्व की सेवा करें। ऐसी आत्माए तब तक फरिश्ता स्थिति में रहती हैं जब तक उनकी विश्व कल्याण की सेवा योजना का कार्य पूरा नहीं हो जाता। फरिश्ता स्वरूप की स्थिति को प्राप्त आत्माए तब तक साकार में दूसरा जन्म नहीं लेती जब तक उनकी दिव्य परिवर्तन की योजना का साकार प्रारूप और प्रकृति के सतोप्रधान तत्वों से भौतिक देह के निर्माण होने की स्थिति नहीं बन जाती। इसलिए आज भी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा अपने फरिश्ता स्वरूप के द्वारा सर्वशक्तिमान परमात्मा के माध्यम बनकर विश्व सेवा में तत्पर हैं।

फरिश्ता स्वरूप स्थिति में अवस्थित आत्मा सदा किसी भी वस्तु, व्यक्ति व घटना के उज्जवल पक्ष को ही देखती है। किसी भी आत्मा या समस्त चर-अचर प्राणी प्रकृति आदि के प्रति भी उसका सदा सकारात्मक दृष्टिकोण स्वाभाविक रहता

है। ऐसी आत्मा किसी भी कमजोर से कमजोर आत्मा को उसके मूल (आदि अनादि) स्वरूप का साक्षात्कार करा सकती है। वह अगर चाहे तो किसी भी आत्मा को उसके तीनों कालों का दर्शन कराने में समर्थ होती है। अर्न्तदृष्टि को प्राप्त ऐसी आत्मा जो चीज जैसी है उसे वैसी ही देखती है। उसपर किसी भी प्रकार की अनुमानित या व्यर्थ बातों का प्रभाव नहीं पड़ता। विचारों वा मन्तव्यों के सही-गलत के द्वन्द से वह कोसों दूर रहती है। वह अपनी अर्न्तदृष्टि से अन्धकार में भी प्रकाश देखने में सक्षम होती है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने व्यवहारिक जीवन में हर परिस्थिति के शुक्ल पक्ष को ही देखा और निरन्तर आगे बढ़ते रहे।

प्रकाश स्वभावत: सबको आकर्षित करता है। प्रकाश की स्वाभाविक गुणवत्ता में एक आकर्षण शक्ति समायी हुई होती है। जो आत्मा स्वयं प्रकाशमय (फरिश्ता) बन जाती है, उसका रुहानी चुम्बकत्व सबको आकर्षित करने लगता है। प्रकाश (आत्मा) का महाप्रकाश (परमात्मा) से मिलन का अनुभव उन्हें सदा बना रहता है। इसलिए ही फरिश्तों को परमात्मा का प्रतिनिधि कहा गया है। फरिश्ते निर्विकार होते हैं। इसलिए उसकी आभा में एक चुम्बकीय आकर्षण होता है। उसके तेजस्वी आभामण्डल के सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को आत्मा के दिव्य प्रकाश का स्पष्ट बोध होता है। ऐसा होने पर आत्माऐं स्वत: पवित्रता को स्वीकार कर लेती हैं। सर्व आकर्षणों, बंधनों से मुक्त ओजस्वी आभा से युक्त प्रजापिता ब्रह्मा बाबा अपनी शक्तियों के द्वारा आत्माओं का महाज्योति परमात्मा से परम-मिलन का अनुभव करा रहे हैं।

सम्पूर्ण आत्मा के लिए कोई भी कार्य करना शेष नहीं रह जाता । कार्य के शेष नहीं रहने का भावार्थ है कि कार्य करने की स्थूल प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है। देह में रहते भी देह और देह की दुनिया से उपराम की निरन्तर स्थिति रहने लगती है। अल्प समय के अन्तराल में वह आत्मा सूक्ष्म प्रकाशमय तेजोमय शरीर में अवस्थित हो जाती है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा साधना के शिखर तक पहुँचकर अब अपने फरिश्ता स्वरूप द्वारा सूक्ष्म रूप से सेवा के कार्य को सम्पन्न कर रहे हैं।

आध्यात्म जगत के गहनतम सूक्ष्म रहस्यों के आधार पर सृष्टि की सभी आत्माओं में ब्रह्मा बाबा अग्रणीय हैं। आत्मा की अनादि शक्तियों एवम् अभिनय के आधार पर भी आपका स्थान सबसे ऊँचा है। तमोप्रधान सृष्टि के परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के निमित्त बनने के कारण भी आप फरिश्तों में अग्रणीय हैं। सृष्टि की मनुष्य आत्माओं में से भी आप क्रमश: क्रमांक में सबसे पहले हैं। असीम अनन्त आध्यात्मिक शक्तियों के स्रोत परमात्मा के आप साकार माध्यम बने और फरिश्ता स्वरूप स्थिति को प्राप्त किया, इस दृष्टि से देखने से यह स्पष्ट है कि आप फरिश्तों के भी शिरोमणि हैं।

फरिश्ता स्वरूप को प्राप्त आत्मा सूक्ष्म रूप से परमात्मा की संदेशवाहक होती है। वे अनेक आत्माओं को सूक्ष्म रूप से आह्वानकरती हैं। उन्हे आध्यात्म के मार्ग पर चलने को प्रेरित करती हैं। वे आत्माए अपने सूक्ष्म शरीर को कहीं भी प्रकट कर अनेकों का अव्यक्त आवाज में मार्ग प्रदर्शन भी करती है। फरिश्तों को यदि कोई आत्मा भावयुक्त संकल्प (दिल) से याद करती है तो इस संकल्प का अनुभव उन्हें अव्यक्त वतन में सेकेण्ड से भी कम समय में हो जाता है। फरिश्ते भाव-संकल्प के अनुरूप तीव्र सूक्ष्म सेवा का कार्य करते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा इसी प्रकार की दिव्य रूप की सेवा में तत्पर हैं।

सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए गहन तपस्या के सोपान चढ़ने होते हैं। त्याग और सेवा का भी व्यवहारिक स्वरूप अनिवार्य होता है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की त्याग-तपस्या-सेवा का स्वरूप अनुकरणीय है। ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व ब्रह्मा बाबा जिन्होंने सम्पूर्णता की मंजिल को प्राप्त करने के लिए अपना समय- श्वास–संकल्प आदि सर्वस्व समर्पण कर दिया, ऐसी मिशाल अन्यत्र देखने को नहीं मिलती । ऐसे अन्तर्दृष्टि दिव्यदृष्टि से नई सृष्टि रचने में तत्पर,अर्शवासी,कर्मातीत,विश्वकल्याण की भावना से अभिभूत, प्रकाशमय तेजस्वी एवम् चुम्बकीय आभामण्डल वाले विश्व की सबसे अधिक पदमापदम भाग्यशाली आत्म।, फरिश्तों के शिरोमणि ब्रह्मा बाबा को हम ब्रह्मा वत्सों का कोटिश: नमन। हम भी आपकी दिव्य रश्मियों की छत्रछाया के तले तपस्या की तीव्र उडान द्वारा सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त करने का दृढ संकल्प करते हैं- ये ही हैं हमारे दिल के उदगार।